# वह कौन लोग हैं जिन्होंने पुलिस को पंचकुला में रोका

**-मजदूर मोर्चा ब्यूरो**

चंडीगढ़: डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम के खिलाफ सीबीआई कोर्ट का फैसला आने के बाद 25 अगस्त को पंचकूला में लाशों का श्मशान बनाने में किसकी भूमिका थी। राम रहीम को 20 साल की सजा हो चुकी है, राज्य सरकार ने हिंसा के मामले में विशेष पुलिस जांच भी बैठा दी है लेकिन उन चेहरों का बेनकाब होना बाकी है जिन्होंने 25 अगस्त को मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को ठेंगा दिखाते हुए, पुलिस को निर्देश देने का काम किया। पंजाब हरियाणा हाई कोर्ट ने तो सीधे हरियाणा के किसी मंत्री का नाम नहीं लिया लेकिन उसने इशारा कर दिया था

कि अगर पुलिस को एक्शन लेने से कोई रोक रहा है तो उसके खिलाफ भी एफआईआर दर्ज की जाए। अंबाला, रेवाड़ी, महेंद्रगढ़ में राम रहीम के अनुयायियों की तादाद बहुत ज्यादा है। मंत्री राम बिलास शर्मा और अनिल विज इसी इलाके से आते हैं या कहिए कि इनका कार्यक्षेत्र यही इलाका है। राम रहीम जो 2014 से पहले तक कांग्रेसियों के संपर्क में था, उसे फौरन भाजपा में सहारे की जरूरत महसूस हुई। उसने अपने कुछ सहायकों को दोनों मंत्रियों के पास बाकायदा यह आंकड़ा देकर भेजा कि उसके अनुयायी बड़े पैमाने पर रामबिलास शर्मा और अनिल विज की राजनीति को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे में राम रहीम की शरण में दोनों को आना चाहिए। नेता ऐसी स्थितियों को भांपने में देर नहीं लगाते।

दोनों ने राम रहीम का निमंत्रण स्वीकार कर लिया और वहां आना-जाना शुरू हो गया। इन दोनों के ही दबाव पर खट्टर ने राम रहीम को हरियाणा स्वच्छता अभियान का ब्रैंड एंबैसडर नियुक्त कर दिया और उसके साथ झाड़ू भी लगाई। यह हकीकत कि खट्टर इन दोनों मंत्रियों की राम रहीम से इतनी निकटता की भनक तक नहीं थी। सिलसिला आगे बढ़ा और इन दो मंत्रियों की वजह से कई और मंत्री, विधायक, सांसद और भाजपा के छोटे-बड़े नेता भी राम रहीम के पास पहुंचने लगे। हरियाणा भाजपा एक तरफ राम रहीम के पास तो दूसरी तरफ ठग गुरु लाला रामदेव के पास गिरवी हो गई। उसी दौरान खट्टर ने विज एंड कंपनी के दबाव पर लाला रामदेव को हरियाणा का ब्रैंड एंबैस्डर बना दिया। हरियाणा सरकार कैसे काम करेगी, इसका नमूना उसी दिन भाजपा ने पेश कर दिया था जब विधानसभा को पहली बार किसी जैन मुनि ने संबोधित किया और उस जैन मुनि ने अपने आपत्तिजनक प्रवचन में सदन के अंदर कहा कि राजनीति और नेताओं पर धर्म का अंकुश होना चाहिए। खटारा सरकार ने उसी क्षण से इसका पूरी तरह पालन किया। दो ठग गुरुओं को ब्रैंड एंबैसडर बनाकर खट्टर चैन की नींद सो गए।

पंचकूला में धारा 144 लागू होने के बावजूद राम रहीम के अनुयायियों को पुलिस ने सिर्फ रामबिलास शर्मा और अनिल विज के मौखिक आदेश पर जमा होने दिया। वरना पुलिस की मर्जी के बिना पांच तो क्या दो लोग भी किसी जगह एक साथ खड़े नहीं हो सकते। लेकिन इन दोनों मंत्रियों का पंचकूला प्रशासन को साफ आदेश था कि राम रहीम के अनुयायियों को कुछ न कहा जाए। रामबिलास शर्मा का वह बयान उसी दौरान आया था कि बाबा राम रहीम के भक्तों पर धारा 144 नहीं है। राम बिलास मीडिया को यह भी बताते रहे कि देखिए बाबा के भक्त कितने शांतिप्रिय हैं कि इनके हाथों में लाठियां-डंडे तक नहीं हैं।

**डीजीपी संधू की क्या भूमिका थी**

हरियाणा के डीजीपी बलजीत सिंह संधू को यह कुर्सी मिली है। इसे बचाने के लिए वह खट्टर मंत्रिमंडल को नाराज नहीं करना चाहते। संधू बेचारे इस बात से डरे रहते हैं कि भाजपा आला कमान में खट्टर की पहुंच है या रामबिलास की या फिर खट्टर को चुनौती देने वाले अनिल विज की। इस चक्कर में वह किसी को भी मना नहीं कर पाते। मंत्री इसका फायदा भी उठा रहे हैं। पंचकूला में पहले सारी कमान रामबिलास और अनिल विज ने खुद अपने हाथ में ले रखी थी लेकिन जब कोर्ट ने डीजीपी को फटकारा तब उन्होंने पुलिस को गोली चलाने का इशारा किया। शहर में जारी हिंसा को रोकने के लिए पुलिस के पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं था। जब 35 लाशों के ढेर लग गए तब संधू पंचकूला पहुंचे और उस समय मीडिया के मौजूद लोगों को उन्होंने बताया कि हमने पैलेट गन का इस्तेमाल किया, हमने राम रहीम के भक्तों की गाड़ियों से आधुनिक हथियार, आपत्तिजनक सामान वगैरह बरामद किए।

...लेकिन डीजीपी एक सवाल का जवाब नहीं दे सके, जिसे हाई कोर्ट जरूर पूछेगी कि जब राम रहीम 100 से ज्यादा गाड़ियों के काफिले के साथ सिरसा से पंचकूला के लिए चला तो उसे रास्ते में क्यों नहीं रोका गया। धारा 144 तो सिरसा में भी थी...और उसकी गाड़ियों का काफिला जहां-जहां से गुजरा वहां भी थी तो आखिर उसे किसके कहने पर पंचकूला तक आने दिया गया। बताया जाता है कि रामबिलास और अनिल विज का पुलिस को सीधा निर्देश था कि राम रहीम को सीधे आने दिया जाए, कहीं रोकटोक नहीं हो।...हाई कोर्ट में पुलिस को यह स्वीकार करना या बताना पड़ेगा कि आखिर किनके कहने पर राम रहीम को इतने बड़े काफिले के साथ पंचकूला तक आने दिया गया। अगर उसके काफिले को बीच में ही पुलिस तलाशी लेती तब शायद उसे बड़े पैमाने पर हथियार मिल जाते। जिनका इस्तेमाल पंचकूला में राम रहीम के भक्तों ने किया। इन गाड़ियों में हथियार थे, जिन्हें पंचकूला ले जाकर बाकायदा राम रहीम के नजदीकी लोगों को दिए गए।

**इतने पैसे कहां से आए**

क्या कोई मीडिया रामबिलास शर्मा या अनिल विज से यह सवाल पूछ सकता है कि उन्होंने डेरा चीफ राम रहीम को जो 52 लाख और 10 लाख रुपये उनके आश्रम में जाकर दिए, वह किसका पैसा था...क्या वह सरकारी खजाने का पैसा था...अगर था तो यह तथ्य खट्टर को क्यों नहीं मालूम कि उनके मंत्री जाकर सरकारी खजाने का पैसा एक बलात्कारी बाबा को दे रहे हैं। अगर वह पैसा उनका अपना था तो क्यों इनकम टैक्स वालों को यह जानकारी नहीं है कि इतना पैसा अगर आप दान भी दे रहे हैं तो उसका हिसाब सरकार को देना ही पड़ता है। क्या मंत्री बनने के बाद हुई कमाई से इतना पैसा दिया गया...सवाल में से सवाल निकलेंगे। लेकिन देश का गोदी मीडिया ऐसे सवाल उठाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा है।

**बढ़ती महत्वाकांक्षा**

जाट आरक्षण आंदोलन के दौरान भी बड़े पैमाने पर हिंसा पुलिस की ढील की वजह से हुई और इस ढील के लिए भी रामबिलास, विज के अलावा दो अन्य मंत्री कैप्टन अभिमन्यु और ओमप्रकाश धनकड़ जिम्मेदार हैं। उस समय भी इन्हीं चारों के निर्देश पर पुलिस काम कर रही थी। यह रहस्य खुलना चाहिए कि झज्जर के पास धनकड़ के घर में आग लगाने वाले कौन थे। पुलिस ने दो चार लोगों को पकड़ा है लेकिन असली बात अभी तक सामने नहीं आई है।

हरियाणा में मुख्यमंत्री का पद ज्यादातर जाटों के पास रहा है। यानी हरियाणा में हर पार्टी ने जाट नेतृत्व को स्वीकार किया। लेकिन जब-जब भाजपा हरियाणा की सत्ता में आई तो उसके पास लेदेकर मंगलसेन या रामबिलास जैसा ही चेहरा था। लेकिन इनकी दाल गली नहीं। इस बार चुनाव चूंकि मोदी को आगे रखकर लड़ा गया था तो मोदी व अमित शाह ने हरियाणा में पैराशूट से मनोहर लाल खट्टर को मुख्यमंत्री बनवा दिया। इधर भाजपा में जाटों की घुसपैठ के बाद यह माना जा रहा था कि अगर रामबिलास की वरिष्ठता को नजरन्दाज कर आलाकमान किसी को कुर्सी देगा तो वह धनकड़ या कैप्टन हो सकते हैं। कैप्टन चूंकि व्यापारी भी हैं तो उसकी उम्मीद ज्यादा थी। लेकिन मोदी-अमित शाह ने इस थ्योरी को खूंटी पर टांग दिया।

...खट्टर के सीएम बनने के बाद से ही भाजपा के जाट नेता खट्टर को पचा नहीं पा रहे हैं। इसलिए हरियाणा सरकार के मंत्रियों में बाकायदा खट्टर विरोधी लाबी बनी हुई है जो समय-समय पर तमाम मुद्दों को इस ढंग से आगे-पीछे कर देती है कि हर कदम पर खट्टर का खटारा बन जाता है। अभी जब राम रहीम को लेकर खट्टर के इस्तीफे की मांग तेज हुई तो धनकड़ और कैप्टन दोनों ही हरियाणा का मुख्यमंत्री बनने का ख्वाब देखने लगे थे।

# अदालत ने सरकार का काम किया और सरकार ने दलाल का

**राम रहीम मामले में हरियाणा-पंजाब हाईकोर्ट ने खट्टर सरकार को फटकार लगाते हुए कहा कि उसने अपने राजनीतिक स्वार्थों के चलते आम जनता के बारे में सोचा तक नहीं और पंचकूला को जलने के लिए छोड़ दिया।**

**धनंजय कुमार का महत्वपूर्ण विश्लेषण**

पंचकुला या आसपास जो कुछ भी हुआ वो सब स्वत: स्फूर्त नहीं, बल्कि सुनियोजित था। भक्ति में डूबे लोगों की भीड़ को कानून व्यवस्था को विवश साबित करने और न्याय को रौंदने के मंसूबे के तहत पंचकुला की सड़कों पर उतारा गया था, जबकि पुलिस से लेकर सेना के जवानों को बलात्कारी बाबा की ताकत के महिमामय प्रदर्शन के लिए सजाया गया था।

और वही हुआ जैसा कि आम आदमी से लेकर पंजाब हरियाणा कोर्ट तक को अंदेशा था। लेकिन कहते हैं न कि जैसी नीयत वैसी ही बरकत होती है, चाल चरित्र और चेहरा के गुण गानेवाली भाजपा सरकारों और संघ की कलई खुल गयी। एक बलात्कारी सरकार, उसके विचार और उसकी पूरी व्यवस्था को नंगा कर गया! एक साथ हमारी आंखों के सामने से कई आवरण हटा दिए। हमने देखा कि हमारे आध्यात्मिक गुरू कैसे होते हैं ? हमने देखा कि भक्ति क्या होती है? हमने देखा कि हमारी पुलिस को किस तरह से हाथ पैर बाँध कर अपराधियों से लड़ने के लिए धकेल दिया जाता है। हमने देखा कि हमारी बहादुर सेना को भी सरकारें किस तरह से मदारी का जमूरा बना देती हैं। हमने देखा कि सरकारों की कथनी और करनी में कितना अंतर होता है। हमने देखा कि हमारी सरकारें कितनी निर्लज्ज और न्याय विरोधी होती हैं। हमने देखा कि सारे राजनीतिक दल एक जैसे ही हैं। हमने देखा कि आम आदमी कितना विवश है। लेकिन इन सबके साथ ही हमने यह भी देखा कि सच की लड़ाई लड़ते हुए कुछ लोग भी लाखों करोड़ों पर कैसे भारी पड़ जाते हैं !

लेकिन बहुत कुछ है, जो हमने नहीं देखा। आइये जो नहीं देखा उसे देखने और समझने की कोशिश करते हैं। सबसे पहले, इस प्रक्रिया को समझते हैं कि कोई व्यक्ति अपने इर्द गिर्द इतना बड़ा तिलस्म कैसे खड़ा कर लेता है कि लाखों करोड़ों लोग आखें मूँदकर उसे अपना आराध्य मान लेते हैं और उसके लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं, मरने मारने पर उतारू हो जाते हैं?

इस बलात्कारी बाबा राम रहीम के बारे में बताया जाता है कि जिस इलाके में इसने जड़े जमानी शुरू कीं थी, वह इलाका तब नशे में बुरी तरह फंसा था। गुरमीत सिंह ने खुद को बाबा राम रहीम बनाकर नशे के खिलाफ खड़ा किया। कहते हैं, बाबा के इस अभियान से लोगों का बाबा पर विश्वास बढ़ने लगा कि बाबा सचमुच विलक्षण हैं और मानव कल्याण के लिए ही अवतरित हुए हैं। बाबा ने भी भक्तों की बढती भीड़ को देखकर समाजसेवा और आध्यात्मिक केंद्र को कंपनी के रूप में खड़ा करना शुरू कर दिया।

पूरी मैनेजमेंट टीम खड़ी की गयी और बाबा का कारोबार ताकत और पैसा के सिंडिकेट में बदलता चला गया। इस तरह एक तरफ बाबा ने सामाजिक आध्यात्मिक कार्यों के माध्यम से गरीबी और मुसीबत में फंसी जनता को अपना अँधभक्त बनाया, तो दूसरी तरफ नेताओं के साथ वोटर के तौर इनकी खरीद बिक्री की और तीसरी तरफ पैसेवालों को सत्ता के साथ गठजोड़ कर लाभ दिलवाया। और धीरे धीरे इतना ताकतवर बन गया कि बाबा किंगमेकर की भूमिका में आ गया। राजनीतिक पार्टियों के साथ बाकायदा डील करने लगा और समय के अनुसार पहले चौटाला को, फिर कांग्रेस और फिर बीजेपी को अपना समर्थन दिया।

समर्थन दिया से समझिये कथित समाजसेवा के दम पर अपने लाखों करोड़ों भक्तों को बेचा। जिसने जितनी ऊंची बोली लगाई, जिसका भविष्य बनता दिखा, बाबा उसके साथ खडा हो गया। और बदले में राजनेताओं ने उसके गुण गाये, बाबा को महान बताया और उसके पापों को ढंकने के हर संभव प्रयास किये। आश्रम की ही एक साध्वी ने जब बाबा के खिलाफ बलात्कार का मामला उठाया, तो चौटाला सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में अर्जी लगाई कि यह केस सीबीआई को न सौंपा जाय। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने अर्जी खारिज कर दी और सीबीआई ने अपनी जांच जारी रखी। इस जांच के दौरान सीबीआई के डीएसपी सतीश डागर पर तमाम किस्म के दबाव पड़े, लेकिन सतीश डागर दबे नहीं।

इस लड़ाई में एक तरफ बाबा की आध्यात्मिक आभा और सरकार की ताकत थी, तो दूसरी तरफ दो पीड़ित लड़की, एक स्थानीय पत्रकार, तीन चार वकील, एक सीबीआई डीएसपी और सच्चाई की ताकत थी। पत्रकार मार दिया गया। फिर भी लड़ाई रुकी नहीं, क्योंकि कुछ ईमानदार और जुझारू किस्म के वकील इन्साफ के लिए खड़े थे। और आखिरकार 15 साल बाद सीबीआई कोर्ट ने बाबा को बलात्कार का दोषी माना।

यह जानना कितना भयावह है कि जिस बाबा के खिलाफ रेप का मुकदमा चल रहा था, दस दिन बाद ही निर्णय आनेवाला है। 15 अगस्त को हरियाणा सरकार के दो मंत्री अनिल बिज और रामविलास शर्मा राम रहीम के जन्मदिन पर डेरे पर गए और हरियाणा सरकार की तरफ से उसे 51 लाख रुपये भेंट करते हैं !

यह जानना कितना भयावह है कि जनता के जीवन को बेहतर बनाने के नाम पर सत्ता में आई भाजपा संविधान को अक्षुण्ण बनाए रखने की शपथ लेने वाली सरकार संविधान की धज्जियां उड़ाती रही! और यह जानना कितना भयावह है कि एक सांसद कोर्ट और न्याय की तारीख करने के बजाय जज को ही कटघरे में खडा कर रहा है कि एक लड़की की शिकायत पर भरोसा करने के बजाय लाखों करोड़ों भक्तों के भरोसे का ख्याल करना चाहिए था। न्याय संख्याबल पर तय होगा या सबूत के आधार पर?!

लेकिन विडम्बना है कि नैतिकता की बात करने वाली सारी राजनीतिक पार्टियां चुप हैं, क्योंकि सारे पापी हैं। बलात्कारी बाबा के सजदा में बैठकर सारी राजनीतिक पार्टियों ने हरियाणा पंजाब की जनता को छला है। पब्लिक तो दोनों तरफ से छली गयी है, सरकारों ने उन्हें गरीब और अशिक्षित बनाए रखा, नागरिक सुविधाओं से महरूम बनाए रखा तो बाबा ने समाजसेवा के नाम उसे जमा कर वोटबैंक बना कर बेचा।